RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

'हादसे' आत्मकथा में व्यक्त गांधीदर्शन

चौहान अलकाबहन .एम

गाँव - बुढ़िया, पो- बड़ोली, तहसील - इडर (साबरकांठा)

(Corresponding Author: patelshashikant27@gmail.com)

रमणिका गुप्ता द्वारा लिखित हादसे आत्मकथा सन २००५ में प्रकाशित हुई जो हिंदी साहित्य में महात्मा द्वारा लिखित आत्मकथा में अपना महत्वपूर्ण स्थान वर्जित करती है | इस आत्मकथा मेंरमणिकाजी के कार्य एवं विचारों में गांधीजी के विचारों का प्रभाव देखने को मिलता है|

गांधीजी द्वारा लिखित सत्य ना प्रयोगो आत्मकथा में हमें गांधी दर्शन की झांकी मिलती है जो पूरी प्रमाणिकता के साथ लिखी गई है गुजराती में लिखी गैया आत्मकथा विधामें भी अपना एक विशिष्ट प्रभाव अंकन करती है|

<u>सर्वधर्म समभाव</u>

बचपन से हीमें रमणिकाजी राजनीति और सामाजिक बदलाव लाने की भावना देखने को मिलती है | जब पांचवी छठी कक्षा में पढ़ती थी तब हो मूर्ति पूजा के खिलाफ घंटों बह स कर थी उनकी बहू की शिकायत विक्टोरिया स्कूल एवं. पटियाला कॉलेज की प्रिंसिपल मिस सेन के पास पहुंचती है मिससैननेरमणिकाजीको बुलाकर खूब डांटा था|

इस तरह रमणिकाजीबचपन से ही सत्य से जूझना बिन सांप्रदायिकता एवं सर्वधर्म समभाव के गुणों की झलक मिलती है|

रमणिकाजी स्कूल में पढ़ती थी तब उनके साथ सईदा नामक एक वैश्या की लड़की भी पढ़ाई के लिए आती थी | सईदा कोक्लासके दूसरे बच्चे चिढ़ाते थे एवं उसके साथ भेदभाव रख ते थे| पर रमणिकाजीसईदा को अपनी सहेली बनाकर इसके साथ भेदभाव रखकर अन्याय करने वालों काजवाब देते हुए कहती है कि "मेरी नजर में उसका वेश्या की बेटी होना या उसकी मां का वेश्या होना समाज का दोष था | वेश्या होने ना होने से ही किसी स्त्री कोपतित सती करार देने को भी मैं गलत मानती थी और इस परिभाषा से असहमत थी आज भी तथाकथित यतीत प्रिया जो वास्तव में यतीत कम ओर सताई हुई अधिक होती है ; अगर मदद के लिए मेरे पास आती है तो मैं बिना किसी की परवाह किए उन्हें अपने यहां रखकर अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए प्रोत्साहित करती हूं"| १

इस तरह रमणिकाजी में हमें समाज द्वारा तिरस्कृत एवं अपना अपमानित किए जाने वाले व्यक्ति को सहारा देकर उसकोसमाज में सम्मानित स्थान दिलाने के लिएअसहाय का सहारा बनकर समाज के सामने जुजकरउनको न्याय दिलाने का प्रयास करती है|

आजाद हिंद फौज के नेताओं पर मुकदमाचलाथा| तो उन्होंने उसके खिलाफ बाकी देश के कार्यक्रम के अनुरूप लड़कियों के विक्टोरिया कॉलेज में पड़ताल करवा दी थी उनमें वह आंशिक रूप से कामयाबी रही थी प्रिंसिपल ने उनको केनिंग की सजा भी दी थी घरवालों ने भी उनकी पिटाई की थी पटियाला रियासत की नजर भी उन पर टिक गई थी वैष्णो की उनके पिताजी उस समय परिभाषा रियासत की फौज में ले कर्नल और डॉक्टर भी थे जिसकी वजह से उन पर नोटिस भी आने लगी थी सब तरफ से दबाव के बावजूद भी

अन्याय के खिलाफ लड़ने की अपनी राजनीति से नहीं हटती वह कहती कि - "राष्ट्र की आजादी की लड़ाई और गांधीजी के प्रभाव में मैंने १५ १६ वर्ष की उम्र में ही खाटी पहननी शुरू कर दी थी बचपन से ही में है खुद सर थी पंजाबी में कहूं तोआपहुदरी ही थी|" २

वो सत्य के मार्ग पर चमकौर अन्याय की खिलाफ लड़ना उनके लिए – 'आग पर चलने की हिम्मत जुटाना जरूरी है हवा के विपरीत चलने का इरादा आवश्यक है हवा के साथ 2003 के उड़ते रहते हैं जो उन्हें जेल कर जड़ से न उखड़े या झेलनेके क्रम में टूट जाए पर उड़े नहीं , चर्चा में वहीं रहते हैं|'

भारत-पाकिस्तान की नंगी के समय वह मुस्लिम महात्माओं की लाठी बनती है मुस्लिम महात्माओं का शोषण करने वाले नेताओं पर भरी सभा में बिना डर के सत्य बयां करते हुए कहती है कि –"यह जो यहां भाषण दे रहे हैं और लड़कियों का खोजने का आश्वासन दे रहे हैं | सब के सब झूठे हैं इनके घरों में दो लड़कियां हैं इन्हीं लोगों के घरों में जाइए एक एक के यहां पांच पांच दस डैड लड़कियां मिल जाएंगी|"३

रमणिकाजी एसी स्पष्ट वक्ता थी सत्य बोलने के लिए उनको किसी का खौफ नहीं था मौत का भी डर नहीं था इस

RRIJM 2015, All Rights Reserved

प्रकाररमणिकाजीजो स्वयं नेताओं पर लड़कियों को अपने घरों में बिठा लिया था उनका भी सबके सामने हैंपोल खोलकर असहाय मुस्लिम औरतोंकी आवाज बनती है|

रमणिकाजी स्वयं क्षत्रिय परिवारसे होकर भी वो वेदप्रकाश गुप्ता के साथ परिवार के खिलाफ जाकर सिविल मेरेज करती है| इस तरह उनमे उचनिच के भेद भी नहीं दिखाई देते|

रमणिकाजी शादी के बाद अपने पति के साथ जालंधर , पंजाब, अम्बाला, भुसावल, अजमेर, दिल्ली ,बम्बई मद्रास हो आने के बाद धनबाद आति है | यहाँ आकर वो राजनीतिमे एवं सामाजिक कार्यमे सक्रीय होती है समाज सेवामे अपनी एक अलग पहचान बनातिओ है| भारत सेवक समाज के तहत कई संसथान खोलकर निम्नवर्गकी गृहिणिया तथा गेरामिन महिलाए ग्रामीण महिलाए एवं बच्चो के लिए प्रशिक्षण केंद्र खोलकर गृहिणियों के लिए सिलाई का काम दे कर , पार्ट टाइम रोजगार भी दिया जाता था | लगभग डेढ़सौ महिलाए घरकी कामकाज करने के बाद इससे अपनी आ जीविका प्राप्त करते थे | रमणिका जी इन संस्थानोकी सचिव थी उसे समय एक प्रश्न उठता है की वे बच्चो को छोड़कर अकेली रहे या उनके पति के साथ कानपूर जाए | क्योंकि उनके पति वेद प्रकाशजीका कानपुरमे क्षेत्रीय श्रमायुक्त के पद पर तबादला हो गया था | उनका कानपुर जान्ने का निर्णयसे सब संस्थानोकों टाला लगना था| आखिर में वो धनबादमें ही ठहरनेका निर्णय लेती है| वो कहती है- 'निर्णय लेना काठी अवश्य था मेरी छोटी बेटी मुश्किल से तीन चार वर्ष की होगी पर सवाल था संस्थानोको चालू रखने का| मैंने धनबादमे अकेले रहने का निर्णय लिया यानी संस्थाए चलानेका निर्णय | परिवारके साथ कानपुर जानेसे अधिक महत्त्व पूर्ण मेरे लिए उन स्त्रीओकी आजीविका और स्वावलम्बन का प्रयास था जो इन संस्थाओ पर आश्रित थी|'

इतना ही नहीं वो कहती है कि - 'मेरी मान्यताथी कि अपने परिवार के लिए तो सभी लोग सबकुछ करते है जो दुसरो के लिए कुछ करे वही इंसान है|'

इस तरह वो अपने परिवार एवं बच्चो से बढ़कर गरीब स्त्रीयोकि आजीविका एवं गरीब बच्चो कि प्रशिक्षणको महत्त्व देकर समाज सेवा का कार्य चुनती है जो उनके जीवनका ससे बड़ा फैसला था |

कच्छ आंदोलन के समय रमणिकाजी अपने पचपन साथिओंके जथ्थे के साथ हिच्च- हाईक वे से जानेका निर्णय लेती है| ताकि रास्तेमे यह जथ्था प्रचारभी करता जाए | रमणिकाजी उस समय युवा जनसभा कि सदस्य भी थी | किशन पढ़नायक नेता थे पर जथ्थे में जाने के लिए नाम तो कई लोगो ने दिए लेकिन रस्ते में पैदल चलकर आनेवाली मुसीबतो से डरकर पचपन में से ग्यारह ही साथी रह गए | फिर भी वो अपना निर्णय नहीं बदलती और पटना से कच्छ तक कि यात्रा कभी हिच्च हाईक करते , कभी रेल गाड़ी, तो कभी नाव में चढ़कर , कभी राजनीनित विरोध सहते, कभी जनता का समर्थन और स्वागत पाकर गदगद होते हुए ग्यारह साथिओ के साथ अपनी यात्रा तय करती है और जनता में भी लोक प्रियता एवं विश्वास प्राप्त करती है | रस्ते में आने वाली मुसीबतो का भी डटकर सामना करके अपनी यात्रा पूर्ण करती है|

तत्कालीन वडाप्रधान इंदिराजी से बात करके रमणिकाजीने मजदूरों को उनका वेतन दिलवा कर उनके रूखे चहेरो पर एक हँसी दी थी| सं १९७० में श्रीमती इंदिरा गांधीने धनबादकी साडी कोकिंग कोलखदानोंको राष्ट्रिय कृत कर दिया था | और रातोरात खदानों पर सरकारी अधिकारिओका कब्ज़ा कर लिया था | कोलियरी मालिकोंने सरकारको रॉयलटीकी भारी रकम नहीं अदा कि थी| इसी लिए सरकारने मुआवजे कि राशि से रॉयलटीकी राशि काटकर मजदूरोको भुगतान करनेका निर्णय किया था | कोयला मजदूरोमे खुसी कि लहार दौड़ गई थी | उन्हें शोषणसे मुक्तिका आकाश नजर आने लगा था|

रमणिकाजीने गरीब आदिवासी , दलितोके जीवन संघर्षोको अपना संघर्ष मानकर उनको न्याय दिला कर उनमे एक लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी|

रमणिकाजीने ग्रामीणोंको अपने अधिकार के लिए लड़ना सिखाया था| इस क्षेत्रमे लोकल कि लड़ाई ' धरती पुत्रोंको' काम कि मुहीम का सूत्रपात लेखिकाने उठाया था और उनमे सफलता भी प्राप्त कि थी | रमणिकाजी कभी अपने खिलाफ जूठी प्रसंशाका स्वीकार नहीं करती | वो कहती है कि - "मैंने कभी सस्ती वाहवाह लूटने के लिए भारी पलडेका साथ नहीं दिया | मै अपने फैसले पर अडिग रही क्योंकि मजदुर चाहे चाप बासा , सिंहभूम या पुरुलिया का हो | मुंडा हो या उराँव , बिलासपुरिया हो या उड़िया , गया का नोनिया हो अथवा पमालुका केवट, करमाली या मोजी, वे सबके सब गरीब आदिवासी या दलित ही थे | बाहरी कहकर उन्हें भगनेकी साजिस को भी हमने तोडा..."४

यहाँ लेखिकका दलितों एवं मजदूरोके प्रति जो वेदना है उसका वर्णन किया गया है| लेखिका कि जो लड़ाई है वो ख़ासकरके मजदूरों के हक़ के लिए है | रमणिकजी बताती है कि बाराह तेरह हजार के बदले केवल आठ हजार मजदूरोको केदलामे नौकरी मिली थी लगभग दो हजार कामीणोंके नाम हटा दिए गए थे | कई नए चहरे आ गए , कई पुराने मजदुर आस लगाए भटकते रहे | कई असली मजदुर छूट गए और जिन्होंने कभी खदानोका मुँह नहीं देखाथा वे नौकरी पा गए थे | ट्रक लोडरों को तो बहाल ही नहीं किया गया, जिससे भारी असंतोष फ़ैल गया | पर मजदुर लम्बी लड़ाई के कारण थकचुके थे|उन्हें थकावट से कैसे उबारे यही मुख्य चिंता थी| रमणिकाजीने कुछ लोगोको केस लड़कर नौकरी दिलवाई तो कुछको आर्बिट्रेशन में नोकरिया दिलवाई|

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इस तरह रमणिकाजी गरीब मजदूरोको रोजी रोटी दिलवाने के लिए गान्धीजीका मिल आंदोलन कि तरह हमेशा संघर्षरत रहकर मजदूरोको रोजी रोटी दिलाकर उनको न्याय दिलाती है|

अपनी आत्मकथामे रमणिकाजीने समाज एवं अपने राष्ट्रकी आम जनता केलिए जो राष्ट्र व्यापी चिंतन किया है वो उच्च कोटि का है| जैसेकि जब रमणिकाजीकी संजय गांधीसे मुलाकात होती है तब लेखिका बताती है कि - " भारत अमरीका नहीं है | यहाँ आबादी ज्यादा और संशाधन कम है| अमरिकामें आबादी कम और संशाधन ज्यादा है | बड़ा क्षेत्रभी तो है अमरीका के पास | वे ओपन कास्ट माइनिंग करता अफोर्ड कर सकते है क्योंकि इक़रात जमीन है उनके पास | हम वैसा करेंगे तो इतने विस्थापित लोगोका क्या होगा? हमारे पास कोयलाही एक मात्र ऐसा साधन है जो ईंधन और ऊर्जा दोनों पैदा करता है | इसी लिए इसे पैदा करने केलिए इसे बचाकर रखना और वैज्ञानिक ढंगसे पैदा करना भी जरुरी है | सावर्जनिक क्षेत्रोंको रोजगार उन्मुख बनाया जाए मशीनो उन्मुख नहीं | इससे बेरोजगारी भी घटेगी| अभी एक क्षेत्र आदमियोंको रोजगार देनेकी बजाय माशिको रोजगार देनेमे व्यस्त है|"

इसतरह यहाँ रमणिकाजीका हमें राष्ट्र व्यापी चिंतन दिखाई देता है|

निष्कर्ष:

अन्याय कि खिलाफ नि:शस्त्र लड़ना , समाज से तिरस्कृत लोगोको सन्मान दिलाना, गरीबी, बेरोजगारी को लेकर राष्ट्र व्यापी चिंतन, उच्च निम्न के भेद मिटाने के लिए खुद गुप्ता परिवार में शादी करना, मजदूरोको उनका हक़ दिलाना , पैदल यात्रा करके लोगोका विश्वास जितना यही गाँधी विचार हमें रमणिकाजीकी आत्मकथामे से वर्णित उपरोक्त प्रसगोमे दिखाई देते है | ५

संदर्भ सूचि

१. 'हादसे' रमणिका गुप्ता प्रु.१६
२. वही प्रु.१७
३. वही प्रु. २१
४ वही प्रु.१६०
५. वही प्रु.१७७-१७८